<u>राज्य सभा</u>

अतारांकित प्रश्न संख्या 483

20 दिसंबर, 2017 को उत्तर के लिए

चीनी इस्पात का पाटन

483. डॉ॰ प्रदीप कुमार बालमुचूः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या यह सच है कि चीन के इस्पात के पाटन और अंतर्राष्ट्रीय इस्पात बाजार की अधोमुखी प्रवृत्ति के कारण देश में इस्पात उद्योग को अनगिनत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) देश के इस्पात उद्योग के संरक्षण के लिए सरकार द्वारा किए गए/किए जा रहे उपचारात्मक उपाय क्या हैं?

<u>उत्तर</u>

इस्पात राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय)

(क) से (ग): भारतीय इस्पात उद्योग विगत में चीन से आने वाले इस्पात की डंपिंग के कारण कई चुनौतियों का सामना कर रहा था। वर्ष 2014-15 में कुल इस्पात (अलॉय + नॉन अलॉय) के आयात में 75.5% की वृद्धि हुई थी। वर्ष 2014-15 के दौरान घरेलू इस्पात की कीमतों में तेजी से गिरावट की प्रवृत्ति नजर आई थी, जोकि वर्ष 2015-16 में भी जारी रही। उपरोक्त के मद्देनजर, सरकार ने देशीय इस्पात उद्योग को सुरक्षित बनाने के लिए वर्ष 2014-15 से निम्नलिखित उपचारी उपाय किए हैं:

(i) अनुचित व्यापार की चुनौती का समाधान करने के लिए पर्याप्त व्यापारिक उपाय किए गए थे, जैसे कि एंटी डंपिंग शुल्क लगाना, सेफगार्ड शुल्क लगाना और न्यूनतम आयात कीमतों को अस्थायी रूप से लागू करना इत्यादि।

(ii) सरकार ने गुणवत्ता नियंत्रण आदेश को सूचित किया है, जो सभी उत्पादित इस्पात और आयातों के संबंध में बीआईएस मानकों के उपयोग को अनिवार्य बनाता है।

(iii) "सरकारी खरीद में घरेलू निर्मित लोहा और इस्पात उत्पादों का उपयोग" नामक एक नीति बनाई गई है, जो घरेलू मूल्यवर्द्धन को सुविधाजनक बनाती है।

******